भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-18 अंक-09 वि. स. 2079 युगाब्द 5124 नवम्बर-2022 वार्षिक चंदा 200/- मूल्य प्रति - 20/-

मार्गदर्शक :

- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

सदस्यता शुल्क : 12 वर्षीय चंदा - रू 2000/- संरक्षक सहयोग राशि - रू 5000/-

जन्म- 14 नवम्बर 1891 पुण्यतिथि - 10 अप्रैल 1949

बीरबल साहनी

पुरा वनस्पति वैज्ञानिक, ख्याति प्राप्त विद्वान।
नाम बीरबल साहनी, जाने सकल जहान।।
पौधों में नई जीन्स को, दिया खोजकर नाम।
ऐसे शिक्षक विद्वान को, वन्दन नमन प्रणाम।।

- शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3,000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8,000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 2,000 की आजीवन (10 **वर्षीय**) सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की 12 **वर्षीय** एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

हम प्रकृति के सान्निध्य में रहते हैं और प्रकृति का अवलोकन करते हैं। जिस प्रकार प्रकृति हमें अन्न, जल, वायु, प्रकाश, ऊर्जा आदि प्रदान करती है उसी प्रकार हम भी दूसरों को कुछ देना सीखें, दूसरों का कुछ हित करें, यही हमारे शास्त्रों में कहा गया है। "परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।" अर्थात दूसरों के हित के लिए सेवा करने में ही जीवन की सार्थकता है। सेवा का यही सन्देश है। सेवा की प्रेरणा ही प्रकृति की देन है।

आचार्य वाग्भट सेवा के प्रति बड़ी सुन्दर बात बताते हुए कहते हैं कि जिनके पास आज जीविका का कोई साधन नहीं है, ऐसे दीन-हीन, असहाय, अनाथ, रोग से ग्रस्त तथा दुःख से पीड़ित प्राणियों की यथाशक्ति सेवा करें, उनके दुःखों को दूर करने का प्रयत्न करें और पतंगा तथा चींटी आदि सभी प्राणियों को अपने समान ही देखें (आत्मवत् सतत पश्येदपि कीटपिपीलिकम्)। हाँ, कुछ यह कह सकते हैं कि उक्त स्थितियाँ तो हमारे लिए आदर्श स्वरूप हैं। सत्य है,पर हमें तो आदर्श का ही अनुकरण करना चाहिए। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम जितना कर सकते हैं उतना भी न करें। आज के व्यस्ततम जीवन में हर व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से कार्य में अपना योगदान नहीं दे सकता है क्योंकि संसार में सबकी अपनी अपनी रुचि, स्वभाव, प्रवृत्ति भिन्न होती है, पर मनसा सेवा तो सभी कर ही सकते हैं। मनसा सेवा अर्थात् विचारों द्वारा सेवा। इसके लिए आवश्यक है शुद्ध, शक्तिशाली और श्रेष्ठ विचार। हम जब भी कभी किसी व्यक्ति को बीमार देखें तो तुरन्त हमारे मन में श्रेष्ठ शुभ संकल्प जाग्रत हो कि वह ठीक हो जाय व उसकी पीड़ा कम हो जाय। हम सड़क पर जा रहे हैं, सामने अस्पताल, एम्बुलेन्स है, दुर्घटना हो गई है, ऐसे समय पर भी हम शुद्ध और उदार भाव के संकल्प तो कर ही सकते हैं जिससे पीड़ित आत्मा को बल मिले। चलते-फिरते, उठते-बैठते हम जहाँ हैं, वहाँ के लोगों के प्रति अपने मन में शुभ विचार रखकर मनसा सेवा कर ही सकते हैं। इसमें हमारे जेब से कुछ खर्च भी नहीं होता, कोई व्यय भार भी नहीं बढ़ता और मात्र अपने मन में किसी के प्रति शुभ संकल्प जागृत रखना होता है। ऐसा करने के लिए यजुर्वेद में वैदिक ऋषि भी ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि "तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु" अर्थात् हमारे मनों में शुभ संकल्प हो। हमारे द्वारा किया हुआ शुद्ध संकल्प वायुमण्डल में फैलकर कार्य में आए हुए विघ्न को जीतकर कार्य को सफलता प्रदान करने के लिए, कार्य में जुड़े लोगों के उमंग और उत्साह के लिए मनसा किये गए सेवा कार्य के परिणाम को नए क्षितिज की ओर ले जाएगी।

अस्तु हम सभी के लिए उचित है कि हम सेवा कार्य में लगें। तन, मन, धन, वचन और कर्म में जिससे जितना बन पड़े उतना करें। परस्पर एक दूसरे का हित करते हुए अपने समाज का, राष्ट्र का और विश्व का कल्याण करें। इन्हीं सद्भावनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

@ शिव

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प तृतीय वर्ष में पदार्पण कर चुका है। वर्तमान में तृतीय बैच की छात्राएं माल एवेन्यू, लखनऊ स्थित छात्रावास में रहते हुए अपनी पढ़ाई कर रही हैं। यहाँ उनको रहने, खाने और शिक्षा के साथ साथ अन्य सभी आवश्यक सुविधाएं नि:शुल्क उपलब्ध करवाई जा रही हैं। प्रकल्प की संचालन समिति की सदस्याएँ बारी बारी से नियमित रूप से छात्रावास जाकर और छात्राओं से मिलकर उनकी विभिन्न गतिविधियों की जानकारी लेते हुए उनका मार्गदर्शन करती रहती हैं। द्वितीय बैच की छात्राओं को नि:शुल्क आनलाइन कोचिंग सुविधा पूर्व की भांति उपलब्ध करवाई जा रही है। साथ ही पूर्व की भांति मासिक छात्रवृत्ति भी प्रदान की जा रही है। दिनांक १६ अक्तूबर को प्रकल्प की छात्राओं के लिए व्यक्तित्व विकास सत्रों की श्रृंखला में PD session का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "त्यौहारों की सार्थकता - सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक परिप्रेक्ष्य में", इसके साथ ही 'इस त्यौहारी मौसम में आनलाइन खरीदारी आपके अनुसार कितनी उचित है'; इस बिंदु पर भी छात्राओं को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करना था। सत्र में बैच 2021 एवं बैच 2022 की छात्राओं द्वारा भाग लिया गया। सभी छात्राओं ने स्पष्टता से अपने विचार प्रस्तुत किए। सत्र के अंत में हमारी संचालन समिति की संरक्षिका श्रीमती नीलिमा जी द्वारा अधिक स्पष्टता से विषय पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं का मार्गदर्शन किया गया। उन्होंने बालिकाओं को हमारे कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु प्रेरित करते हुए ज्यादा आनलाइन खरीदारी की तरफ न झुकने के लिए समझाया।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रथम बैच की छात्रा दिव्या त्रिवेदी को NIT श्रीनगर (CS branch) में प्रवेश मिल गया है, हालांकि अभी एक चक्र की काउन्सलिंग शेष है।

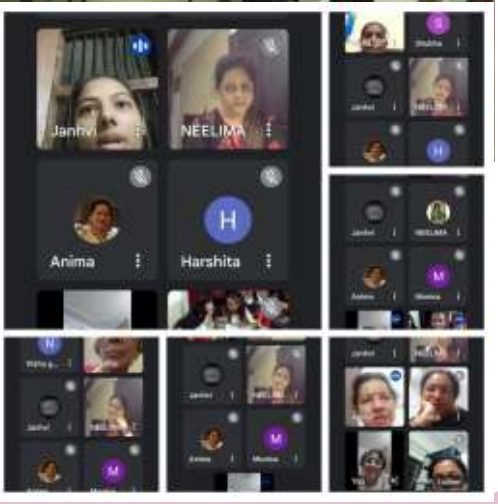

भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यानमाला

भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यान - 29वाँ पुष्प

"समाज और समाज के लिए सेवा"

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा वर्ष में एक बार किसी महान विभूति द्वारा एक समसामयिक विषय भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष 6 अक्टूबर को भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यानमाला - 29वाँ पुष्प, का आयोजन नई दिल्ली में NDMC सभागार में हुआ जिसका विषय था - "समाज और समाज के लिए सेवा"। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष थे - पद्मश्री प्रो. रणदीप गुलेरिया जी, पूर्व निदेशक, AIIMS दिल्ली। मुख्य वक्ता थीं - पद्मश्री सुश्री निवेदिता रघुनाथ भिड़े जी, उपाध्यक्ष, विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी। साथ में स्वागताध्यक्ष- श्री राजेश अग्रवाल जी (माइक्रोमेक्स इन्फ़र्मैटिक के संस्थापक) तथा न्यास के अध्यक्ष श्री ओ पी गोयल जी भी मंचस्थ थे।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन तथा अतिथि परिचय और स्वागत से हुई। तत्पश्चात श्री राजेश अग्रवाल जी ने अपने स्वागत भाषण में कहा - "संघ ने हिन्दुओं को जोड़ने का कार्य किया है। आज हम देश से बाहर जाकर गर्व से कहते हैं कि मैं भारतीय हूँ। न्यास के साथ साथ मैं विश्राम सदन देहरादून के कार्य से भी जुड़ा हूँ"।

एकल गीत के बाद मुख्य वक्ता - पद्मश्री निवेदिता रघुनाथ भिड़े जी ने "समाज और समाज के लिए सेवा" विषय पर अपना उद्बोधन दिया। उन्होंने बताया कि युवावस्था में उन्हें श्री भाऊराव देवरस जी से मिलने का सौभाग्य मिला था। उन्होंने बताया कि भाऊराव देवरस जी को आदरांजलि देने के लिए ही वो आईं थी। उनके अनुसार भारत में किसी भी विषय पर चर्चा करने के लिए दो मुख्य विषयों पर चर्चा करना आवश्यक है – इस राष्ट्र का जीवन दर्शन क्या रहा है और मानव जीवन का उद्देश्य क्या है? उनके सारगर्भित भाषण में छुए गए मुख्य बिंदु हैं -- भारत का जीवन एकात्म जीवन दर्शन है; समाज का मतलब है पूरा भारतवर्ष; आत्मीयता से समाज की सेवा करना; समाज भगवान रूपी है; अपने कार्य को अच्छी तरह से करना; प्राथमिक आवश्यकताओं की आपूर्ति की सेवा; ग़रीब व्यक्ति को उसके पैरों पर खड़े होने में मदद करना; सवेदनशील सेवा; ऐसे समाज की स्थापना करना जहाँ पर समाज के लिये आवश्यक सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति अपने आप होती हो; संगठित होकर सेवा करना; समाज के लिए कुछ

करना वो आत्मीयता पर आधारित है; आत्मीयता की अनुभूति समाज को होनी चाहिए; समाज का आधार धर्म है, और धर्म को पक्का करना है वही समाज सेवा है; समाज ईश्वर रूपी है और इसकी पूजा भाव से सेवा करनी है और मुझे ईश्वर की पूजा करने का सौभाग्य मिला है; आदि। उन्होंने बताया कि सेवा के चार प्रकार हैं – (Tangible) वास्तविक, (Intangible) अमूर्त, प्राथमिक सेवा - अन्न देना और व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा करना। समाज को संवेदनशील बनना होगा। कानून से भी परे धर्म होता है। प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य हो कि उसके कारण किसी भी एक व्यक्ति को भोजन में मदद हो सके। हमें सप्ताह में कुछ समय समाज सेवा के लिए अवश्य निकालना चाहिए। हमें समाज को सुसंगठित करना है। समाज चेतना के द्वारा हमें ऐसे समाज का निर्माण करना है ताकि सारी आवश्यकता पूर्ण हो सकें। समाज रूपी ईश्वर की पूजा-कर्म के लिए योग्य बनाने से ही हम ईश्वर की पूजा करने योग्य होंगे । समाज को पूरी मानव जाति का मार्गदर्शन करना है। "Purity, Patience, Perseverance" - स्वामी विवेकानद जी का कथन है। उन्होंने उदाहरण दिया कि भोपाल गैस त्रासदी में रेलवे स्टाफ ने भागने के स्थान पर अपनी जान गवां कर अनेक लोगों की जान बचाई। समाज सेवा ही एक साधना है और ये नित्य चलनी चाहिए।

तत्पश्चात कार्यक्रम अध्यक्ष - पद्मश्री प्रो. रणदीप गुलेरिया जी ने अपने उद्बोधन में न्यास के काम की सराहना करते हुए कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा दो प्रमुख सेवा क्षेत्र हैं। किसी को शिक्षित करना भी एक सेवा है और इससे देश आगे बढ़ सकता है । सभी को समाज की तरफ अपना कर्तव्य समझना है जैसा कि कोविड महामारी में समाज ने देखा । सेवा की भावना साथ लेकर चलने में ही मन की शांति है । उन्होंने कहा कि सेवा में कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिये, केवल स्वयं के मन की शान्ति ही अपना स्वार्थ होना चाहिए। हम सेवा के कामों के लिए किसी भी संगठन से जुड़ सकते हैं । उन्होंने पुनः स्मरण कराया कि किसी भी देश को आगे बढ़ना है तो दो विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं - स्वास्थ्य और शिक्षा । समाज में सेवा की भावना होना बहुत आवश्यक है। सेवा नि:स्वार्थ भाव से ही करनी चाहिये और सेवा करने के बाद उसे भूल जाना उचित रहेगा ।

सौभाग्य से इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह सरकार्यवाह श्रीमान डॉ कृष्णगोपाल जी भी उपस्थित थे । न्यास के अनेक न्यासी सपरिवार उपस्थित रहे । इस कार्यक्रम में कुल 280 लोगों की उपस्थिति रही । कार्यक्रम के अंत में न्यास के सचिव श्री राहुल सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया । कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत वन्देमातरम के साथ हुआ। सभी आगंतुकों के लिए न्यास की ओर से प्रारम्भ में चाय नाश्ता और अंत में भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई थी।

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली

सामाजिक न्याय का एक महत्वपूर्ण बिंदु है कि हर मनुष्य को भरपेट भोजन मिले। संसार में जन्म लेने वाले के लिए भोजन उसका मौलिक अधिकार है।

2 अक्टूबर को वसंत वैली, दिल्ली के निवासियों द्वारा सफदरजंग अस्पताल के निकट भोजन वितरण

2 अक्टूबर को वसंत वैली के निवासियों ने सफदरजंग अस्पताल के निकट हुए भोजन वितरण में बाग़ लिया । श्री राजेंद्र प्रसाद जी, श्री नीरज गुप्ता जी, श्रीमती लता पुरोहित जी, श्री सी एम पुरोहित जी, श्री सुरेन्द्र कंसल जी और श्री संतोष जैन गंगवाल जी ने अपने हाथों से भोजन वितरण कर पुण्य प्राप्त किया। उन्होंने सभी से अपील की कि वे सभी अक्षय सेवा प्रकल्प के साथ जुड़ें और अपने घर के मंगल प्रसंगों पर परिवार सहित भाग लें और अपनी खुशी समाज के इस वंचित वर्ग के साथ मनाएं।

भक्ति और सेवा

राजा सुशर्मा अपने दरबारियों के हर प्रश्न का जवाब देते थे। एक बार एक व्यक्ति ने दरबार में उनसे पूछा, 'राजन, मनुष्य के जीवन में भक्ति और सेवा में किसका महत्व ज्यादा है?' उस समय राजा सुशर्मा उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाए लेकिन वह इस बारे में लगातार सोचते रहे। कुछ समय बाद राजा शिकार के लिए जंगल की ओर निकले लेकिन उन्होंने किसी को साथ में नहीं लिया। घने जंगल में वह रास्ता भटक गए। संध्या हो गयी और प्यास से उनका बुरा हाल हो गया था। काफी देर भटकने के बाद उन्हें एक कुटिया दिखाई दी। वह किसी संत की कुटिया थी। राजा किसी तरह कुटिया तक पहुंचे और 'पानी-पानी' कहते हुए मूर्छित हो गए। कुटिया में संत समाधि में लीन थे। राजा के शब्द संत के कानों में गये। "पानी-पानी" की पुकार सुनने से संत की समाधि भंग हो गयी। वह अपना आसन छोड़ राजा के पास गए और उन्हें पानी पिलाया। पानी पीकर राजा की चेतना लौट आयी। राजा को जब पता चला कि संत समाधिस्थ थे तो उन्होने कहा 'मुनिवर मेरी वजह से आपके ध्यान में व्यवधान हुआ अतः मैं दोषी हूं। मुझे प्रायश्चित करना होगा। 'संत ने कहा 'राजन, आप दोषी नहीं हैं इसलिए प्रायश्चित करने का प्रश्न ही नहीं है। प्यासा पानी मांगता है और प्यास बुझाने वाला पानी देता है। आपने अपना कर्म किया है और मैंने अपना। यदि आप पानी की पुकार नहीं करते तो आपका जीवन खतरे में पड़ जाता और यदि मैं समाधि छोड़कर आपको पानी नहीं पिलाता, तब भी आपका जीवन खतरे में पड़ता। आपको पानी पिलाकर जो संतुष्टि मिल रही, वह कभी समाधि की अवस्था में भी नहीं मिलती। भक्ति और सेवा दोनों ही मोक्ष के रास्ते हैं, लेकिन यदि आप आज प्यासे रह जाते तो मेरी अब तक की सारी साधना व्यर्थ हो जाती।' राजा को उत्तर मिल गया था कि सेवा का महत्त्व भक्ति से अधिक है।

विश्राम सदन, पटना

पटना विश्राम सदन में भगवान् गणेश जी की मूर्ति स्थापना

विश्राम सदन की संचालन समिति का विचार था कि सदन में भगवान श्रीगणेश जी की मूर्ति होनी चाहिए। सदन में आने वाले अनेक परिचारकों का आग्रह भी इस विषय में रहता था।

अतः दिनांक 5 अक्टूबर 2022 दिन बुधवार को पावर ग्रिड विश्राम सदन में श्री गणेश जी की एक प्रतिमा का अनावरण किया गया। इस अवसर पर संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री राम नवमी जी, क्षेत्र कार्यवाह श्री मोहन जी, प्रांत प्रचारक श्री राणा प्रताप जी, मा. विभाग सह संघचालक श्री यशवंत जी, श्री रोशन जी, श्री कैलाश जालान जी एवम क्षेत्रीय विधायक श्री संजीव चौरसिया जी उपस्थित रहे। पूजन पूरे विधि विधान के साथ सदन के सचिव श्री नागेंद्र प्रसाद सिंह जी के हाथों संपन्न हुआ। उन्होंने अपने परिवार के साथ पूरे समय तक रहकर पूजन कार्य सम्पन्न किया। अंत में उपस्थित लोगों के बीच प्रसाद वितरण किया गया।

भाऊराव देवरस स्मृति छात्रवृत्ति योजना

न्यास की योजना से प्रतिवर्ष उत्तर पूर्व के राज्यों, जम्मू कश्मीर और अन्य वनवासी क्षेत्रों के निर्धन विद्यार्थियों की बिना रूकावट पढ़ाई के उद्देश्य से छात्रवृत्ति दी जाती है। प्रतिवर्ष 200 से अधिक छात्र-छात्राओं को यह छात्रवृत्ति दी जाती है। वर्तमान में कक्षानुसार दी जाने वाली छात्रवृत्ति की राशि है :

प्राथमिक कक्षा	:	रू 3000/-
माध्यमिक कक्षा	:	रू 5000/-
हाईस्कूल	:	रू 7000/-
इंटरमीडिएट	:	रू 8000/-
आई आई टी/डिप्लोमा एवं स्नातक	:	रू 10,000/-
परास्नातक	:	रू 12,000/-
प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी हेतु	:	रू 15,000/-
इन्जीनियरिंग	:	रू 18,000/-
मेडिकल	:	रू 20,000/-

न्यास की इस योजना में सहकार के इच्छुक महानुभाव कृपया 9811068375 पर संपर्क करें। आप एक या अधिक विद्यार्थियों के लिए सहयोग कर सकते हैं।

समर्थ भारत - दिल्ली

- प्रमाणपत्र वितरण समारोह – दिनांक 8 अक्टूबर को टैंक रोड केंद्र के ब्यूटीशियन कोर्स के द्वितीय बैच के प्रमाणपत्र वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह बैच 30 मार्च 2022 से 29 जून 2022 तक था और कुल 20 बहनों ने प्रशिक्षण पूर्ण किया था।
- मालवीय नगर प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के तीसरे बैच का तीन माह का प्रशिक्षण 04 दिसम्बर 2022 को पूर्ण होगा। इस बैच में 23 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण सुश्री अंजली जी के द्वारा दिया जा रहा है। प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। अक्टूबर माह के प्रशिक्षण में निम्न विषय कवर किये गए – Waxing, साड़ी बाँधना, मेहंदी, केश सज्जा, Hair SPA, Hair Keratin, Hair Coloring, काली माँ और गौरी माँ का मेकअप आदि।

शुभ परिणाम

मेरा नाम मंगल सिंह है और मैं त्रिलोकपुरी में रहता हूँ। मेरी तनिष्का इलेक्ट्रिकल के नाम से एक दुकान है जिसमें मैं बिजली से जुड़े सामान्य रिपेरिंग के काम किया करता था। कमाई तो ज्यादा नहीं हो पाती थी पर परिवार का गुजारा चल रहा था। ऐसी स्थिति में कोरोना महामारी आने के बाद मेरी दुकान चलनी बंद हो गयी और कुछ काम भी नहीं मिल रहा था। तभी मैंने किसी से समर्थ भारत के बारे में सुना जिसमें ए. सी. और रेफ्रिजिरेटर का एक माह का कोर्स सिखाया जा रहा था। मैंने अपने ही फील्ड में अपनी स्किल को बढ़ाने के लिए 6 दिसम्बर 2021 से 5 जनवरी 2022 के दौरान न्यू अशोक नगर केंद्र में इस कोर्स का प्रशिक्षण लिया। कोर्स में ट्रेनर ने हर एक बात को बारीकी से बताया और सभी सवालों का अच्छी तरह से जवाब भी दिया। ट्रेनिंग के बाद मैंने अपनी दुकान में ए.सी. और रेफ्रीजिरेटर की रिपेयरिंग का काम भी शुरु कर दिया। साथ ही लोगों के घरों पर जाकर भी काम करने लगा। धीरे-धीरे मेरे पास काफी जगह से काम मिलने लगा तो मैंने अपने साथ अपने ही कुछ सहपाठियों तेजपाल, दीपक और अनिल को जोड़ा जो अलग-अलग जाकर काम कर रहे हैं। इस तरह से मैं खुद 30 से 40 हजार रुपये महीने के कमा लेता हूँ। मेरे साथ में जुड़े हुए मेरे साथी भी 20 से 25 हजार रुपये महीने के कमा रहे हैं।।

विभिन्न प्रकल्पों में दीपावली पूजन

न्यास कार्यालय निराला नगर में आयोजित दीपावली पूजन के अवसर चिकित्सकों के साथ न्यास के सह-सचिव श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल जी, विद्याभारती के अखिल भारतीय सह सगठन मंत्री मा. यतिन्द्र शर्मा जी और राष्ट्रीय मंत्री मा. शिवकुमार जी उपस्थित रहे।

पटना विश्राम सदन

लखनऊ कार्यालय

न्यास द्वारा संचालित माधव सेवा आश्रम, KGMU विश्राम सदन, पटना विश्राम सदन, दिल्ली विश्राम सदन और झज्जर विश्राम सदन में दीपावली धूमधाम से मनाई गई। लखनऊ और दिल्ली स्थित कार्यालयों में भी पूजन हुआ।

एम्स विश्राम सदन, दिल्ली में दीपावली

दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में 21 अक्टूबर को दीपावली के पावन पर्व के उपलक्ष्य में सुन्दरकाण्ड के पाठ का आयोजन किया गया। सायं 5 बजे शुरू हुए इस भव्य कार्यक्रम में सभी ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

इस कार्यक्रम में न्यास के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल जी, सचिव श्री राहुलसिंह जी, कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार किला जी, श्रीमती सुशीला किला जी, डॉ अनुराधा, श्री विनोद किला, श्री देवेश शुक्ला जी, श्री सुन्दर शर्मा जी, श्री प्रमोद जी, श्री गजराज जी आदि उपस्थित थे। सदन में रह रहे लगभग सभी बंधुओं ने भी इस आयोजन में भाग लिया।

कुछ नर्सिंग ऑफिसर्स, सदन में रह रही एक बच्ची, पद्मा जी एवं सुष्मिता जी ने मिलकर खूबसूरत रंगोली बनाई जिसे सभी ने अत्यंत पसंद किया। सदन में कार्यरत सभी कर्मचारियों ने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुल 250 से अधिक लोगों ने इसमें भाग लिया। आदरणीय पंडित जी द्वारा बड़े सुन्दर ढंग से सुन्दरकाण्ड का पाठ कराया गया। अंत में सभी के लिए भोजन प्रसाद की व्यवस्था थी।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

ऋषिकेश में सुदूर पहाडी क्षेत्रों से आने वाले एम्स के रोगियों व उनके सहायकों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए निर्माणाधीन माधव सेवा विश्राम सदन का कार्य अपने तय किए अनुसार ही आगे बढ़ रहा है। निर्माण कार्य के अक्टूबर मास के कुछ दृश्य संलग्न हैं।

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन की स्थापना प्रस्तावित है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली

A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :

MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या **CSR00004454**
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या **AAATB1049GF20217**
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या **136550134**

पावन स्मृति - नवम्बर

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

दिनांक	दिवस	महापुरूषों का नाम
2 नवम्बर	जन्म-दिवस	भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट : महाराजा रणजीत सिंह
3 नवम्बर	बलिदान-दिवस	प्रथम परमवीर चक्र विजेता : मेजर सोमनाथ शर्मा
4 नवम्बर	पुण्य-तिथि	हिंदी समय सारिणी के निर्माता : मा. मुकुंददास प्रभाकर
9 नवम्बर	पुण्य-तिथि	समाज सेवी महर्षि कर्वे
10 नवम्बर	बलिदान-दिवस	अमर हुतात्मा : भाई मतिदास, सतिदास एवं दयाला
11 नवम्बर	बलिदान-दिवस	धर्म-रक्षा हेतु बलिदान : गुरु तेग बहादुर
14 नवम्बर	जन्म-दिवस	वनस्पति शास्त्री : डॉ बीरबल साहनी
16 नवम्बर	बलिदान	भगत सिंह के प्रेरणा स्त्रोत : सरदार करतार सिंह सरावा
17 नवम्बर	बलिदान	पंजाब केसरी : लाला लाजपत राय
19 नवम्बर	पुण्य-तिथि	निरासक्त संत : देवरहा बाबा
19 नवम्बर	जन्म-दिवस	श्रद्धेय भाऊराव देवरस
19 नवम्बर	जन्म-दिवस	विवेकानंद शिला स्मारक के शिल्पी : मा. एकनाथ रानाडे
22 नवम्बर	जन्म-दिवस	वीरांगना झलकारी बाई
23 नवम्बर	जन्म-दिवस	कर्मयोगी गोविन्द राव कात्रे
24 नवम्बर	पुण्य-तिथि	केरल में धर्म रक्षक : स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
28 नवम्बर	जन्म-तिथि	क्रांतिकारी भाई हिरदा राम
30 नवम्बर	पुण्य-तिथि	क्रांति कथाओं के गायक : मा. वचनेश त्रिपाठी

बीरबल साहनी (वनस्पति वैज्ञानिक)

(14 नवंबर 1891 - 10 अप्रैल 1949)

बीरबल साहनी का जन्म पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) के शाहपुर जिले के भेड़ा नामक एक छोटे से व्यापारिक नगर में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है। इनके पिता रुचि राम साहनी रसायन के प्राध्यापक थे। प्रोफेसर रुचि राम साहनी ने उच्च शिक्षा के लिए अपने पांचों पुत्रों को इंग्लैंड भेजा तथा स्वयं भी वहां गए।

प्रो. बीरबल साहनी मैनचेस्टर गए और वहां कैम्ब्रिज के प्रोफेसर अर्नेस्ट रदरफोर्ड तथा कोपेनहेगन के नाइल्सबोर के साथ रेडियोसक्रियता पर अन्वेषण

कार्य किया। वे अपने अनुसंधान कार्य में कभी हार नहीं मानते थे, बल्कि कठिन से कठिन समस्या का समाधान ढूंढने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। इस प्रकार, 'जीवन को एक बड़ी चुनौती के रूप में मानना चाहिए', यही उनके कुटुंब का आदर्श वाक्य बन गया था।

उन्हें वर्ष 1919 में लन्दन विश्वविद्यालय से और 1929 में केंब्रिज विश्वविद्यालय से डी.एस-सी. की उपाधि मिली थी। भारत लौट आने पर ये पहले बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान के प्राध्यापक नियुक्त हुए। 1939 में ये रॉयल सोसायटी ऑफ लन्दन के सदस्य (एफ.आर.एस.) चुने गए और कई वर्षों तक साइंस कांग्रेस और नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज़ के अध्यक्ष रहे। इनके अनुसंधान जीवाश्म (फॉसिल) पौधों पर सबसे अधिक हैं। इन्होंने एक जीवाश्म 'पेंटोज़ाइली' की खोज की, जो राजमहल की पहाड़ियों में मिला था। इसका दूसरा नमूना अभी तक कहीं नहीं मिला है। हिंदू विश्वविद्यालय से डा. साहनी लाहौर विश्वविद्यालय गए, जहाँ से लखनऊ में आकर इन्होंने 20 वर्ष तक अध्यापन और अन्वेषण का कार्य किया।

वे अनेक विदेशी वैज्ञानिक संस्थाओं के सदस्य थे। लखनऊ में डा. साहनी ने पैलिओबोटैनिक इंस्टिट्यूट की स्थापना की, जिसका उद्घाटन पं. जवाहरलाल नेहरू ने अप्रैल 1949 में किया था। 10 अप्रैल को आपने अंतिम साँस ली।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस ने इनके सम्मान में 'बीरबल साहनी पदक' की स्थापना की है, जो भारत के सर्वश्रेष्ठ वनस्पति वैज्ञानिक को दिया जाता है। इनके छात्रों ने अनेक नए पौधों का नाम साहनी के नाम पर रखकर इनके नाम को अमर बनाए रखने का प्रयत्न किया है।

महर्षि केशव कर्वे

(जन्म 18 अप्रैल, 1858 निधन 9 नवम्बर 1962)

महर्षि कर्वे का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के 'मुरूड़' नामक गाँव में हुआ था। केशव कर्वे के माता-पिता बहुत ही स्वाभिमानी और उच्च विचारों वाले थे, परन्तु उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वे अपने पुत्र को अच्छी शिक्षा और संस्कारों से युक्त बनाना चाहते थे, किंतु अधिक कुछ ना कर सके।

बचपन में ग़रीबी की हालत में शिक्षा ना मिलने का कष्ट क्या होता है, वह भली भाँति जानते थे। गांवों में शिक्षा को सहज सुलभ बनाने और उसके प्रसार के लिए उन्होंने चंदा एकत्र कर लगभग 50 से भी अधिक प्राइमरी विद्यालयों की स्थापना की थी।

महर्षि कर्वे का कार्य केवल महिला विश्वविद्यालय या महिलाओं के पुनरोत्थान तक ही सीमित नहीं रहा, वरन् उन्होंने 'इंडियन सोशल कॉफ्रेंस' के अध्यक्ष के रूप में समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। एक महान् सुधारक होने के साथ साथ वह एक अच्छे शिक्षा शास्त्री भी थे। सन 1958 में जब महर्षि कर्वे ने अपने जीवन के सौ वर्ष पूरे किए, देश भर में उनकी जन्म शताब्दी मनायी गयी। इस अवसर को अविस्मरणीय बनाते हुए भारत सरकार द्वारा इसी वर्ष उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान और स्मृति में एक डाक टिकट भी ज़ारी किया गया। उन्होंने 105 वर्ष की दीर्घ आयु प्राप्त की और अंत तक वह किसी न किसी रूप में मानव सेवा के कार्यों में लगे रहे। 9 नवम्बर 1962 को इस महान् आत्मा ने इस लोक से विदा ली।

विश्राम सदनों में अक्टूबर-2022 में आने वाले नए रोगी व सहायक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर			2		7	9
2	हिमाचल प्रदेश					1	1
3	पंजाब	4		3		1	8
4	हरियाणा	4		17		244	265
5	दिल्ली	2		15	4	83	104
6	उत्तराखंड	2		23		17	42
7	उत्तर प्रदेश	1609	950	249	7	312	3127
8	बिहार	894	73	226	1625	66	2884
9	झारखण्ड	112	1	32	26	6	177
10	सिक्किम						
11	नागालैंड						
12	असम			4			4
13	मणिपुर /मिजोरम			2			2
14	अरुणाचल प्रदेश						
15	त्रिपुरा						
16	मेघालय					1	1
17	प. बंगाल	27	2	20	7	6	62
18	ओडिशा/अंदमान			10		1	11
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना	2					2
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी						
21	कर्नाटक	2			1		3
22	केरल				1		1
23	महाराष्ट्र /गोवा	26			4		30
24	मध्य प्रदेश	72	19	79		21	191
25	छत्तीसगढ़	18		4			22
26	गुजरात	4					4
27	राजस्थान		2	44		18	64
28	अन्य						
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	17	6	14	2	4	43
30	बांग्लादेश						
31	अन्य देश						
	योग (इस मास)	**2795**	**1053**	**744**	**1677**	**788**	**7057**
	योग (अप्रैल 22 - मार्च 23)	**20622**	**6107**	**4804**	**13776**	**4479**	**49788**
	एक दिन की औसत उपस्थिति	**333**	**121**	**261**	**176**	**254**	**1145**

RNIN-UPHIN/2005/15853

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	अक्त.	अप्रैल 22 से
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	18	140
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	113	966
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	25	308
अम्बेडकर नगर	31	248
माधव सेवा आश्रम	15	94
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	498	3349
होम्योपैथिक	302	2120
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	228	1553
कुल लाभान्वित रोगी	1230	8778

नेत्र चिकित्सा (अक्टूबर)

	देवड़े नेत्र चिकित्सालय लखनऊ	अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	योग (अप्रैल 2022 से)
नेत्र परीक्षण	400	2165	16500
चश्मा वितरण	241	1558	11848
मोतियाबिंद ऑपरेशन	4	0	84
Fundus Test	0	0	48
OCT Test	0	0	6
पैथोलॉजी	110	0	1334

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जाँच केवल 20 रूपये के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती सीमा अग्रवाल	9335922353
सामाजिक विज्ञानं एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू. , लखनऊ	श्री जितेन्द्र अग्रवाल	9415003111
देवडे नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स , दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई. जी. आई. एम. एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन , ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952
अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006

बुक पोस्ट
छपा-साहित्य

सेवा में,

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी